तिलहनी फसलों में एकीकष्त नाशीजीव प्रबन्धन

मुख्य कीट :

1. तेला :– पौधे पर यह कीट बहुत अधिक संख्या मे पाया जाता है और बढ़ती टहनियों, फूलों औी फलियों पर मध्य फरवरी से कटाई तक रहता है। यह कीट रस चूसते है जिसके कारण कीट ग्रसित पौधों में बीज कम बनते हैं।

रोकथाम :–

- येलो स्टिकी ट्रैप का प्रयोग करें।
- फूल आने से पहले ग्रस्त पौधों के ऊपरी भाग को नष्ट करें।
- क्राइसोपरला कार्निया (ग्रीनलेसविंग) कम से कम 1000 ग्रब प्रति एकड़ या 2–3 ग्रब प्रति पौधा छोड़ें। जब मध्य शाखा में कम से कम 50 तेले या 4 मि0ली0 में तेले हो तो फसल पर 750 मि.ली. साईपरमैथरिन का 750 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

सवधनियां :–

- दवाई छिड़काव के बाद सरसों के पत्तों को साग के रूप में प्रयोग न करें। यदि फसल केवल साग के लिये उगाई गई है और उसमें तेले का प्रकोप हो तो स्टिकीट्रैप लगॉए तथा मैलाथियोन (50 ई0सी0) 2 मि0ली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। परन्तु पत्तों के साग के रूप में कम से कम सात दिन बाद प्रयोग करें।
- केवल सुरिक्षत तथा मित्र कीटों पर कम प्रभाव डालने वाले रासायनों का प्रयोग करें।
- दवाई का छिड़काव दोपहर के समय न करें क्योंकि इस समय ज्यादा संख्या में मधुमक्खियां खेतों मे आती है।

2. पर्णखानिक कीट :– ये छोटे–2 कीट होते है। ये पत्तों व सफेद चमकीली सुरंगे बना देते हैं।

रोकथाम :–

- ज्यादा ग्रसित पत्तियों को तोड़ कर नष्ट करें।
- बीज की फसल पर 750 मि0ली0 साईपरमिथरिन 10 ई0सी0 (रिपर्काड) को 750 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है0 छिड़काव करें।
- कीट वयाधिकारक दवाई मैरिजियम का इस्तेमाल करें।

3. सरसों की सॉफाई :– इसकी सुण्डियां कोमल पत्तों में छेंद कर देती हैं तथा अधिक प्रकोप में सारे पत्ते खा जाती हैं।

रोकथाम :–

- फसल की आरम्भिकक अवस्था में 500 मि.ली. मैलाथियान/साईथियान 50 ई.सी.का 500 लीटर पानी में प्रति हैक्टेयर छिड़काव करें।

4. हेयरी कैटरपिलर :– सुण्डियों के शरीर पर भूरे रंग के बाल होते है और यह झुण्ड में पलती है और पत्तों को खा जाती हैं।

रोकथाम :–

- सुण्डियों को इक्ट्ठा करके उन्है नष्ट करें।
- अण्ड परजीवी ट्राईकोग्रामा किलोनिस 50.000 अण्डे प्रति हैक्टेयर की दर से 2–3 बार छोड़े
- 300 मि.ली. साईपमैथिरन या 500 मि0ली0 डाईक्लोरवास (न्यूवॉन) 750 मि0ली0 पानी में मिलाकर प्रति हैक्टेयर छिड़काव करें।

5. गोभी की सुण्डियां :– ये सुण्डियों पत्तों तथा बनती हुई फलियों को खा जाती है। छोटी सुण्डियों में तथा बड़ी अलग–अलग नुक्सान करती हैं।

रोकथाम :–

- फसल में ट्राईकोग्राम किलोनिस 50.000 प्रति हैक्टेयर की दर से छोड़ें।
- सुण्डियों को इक्ट्ठा करके नष्ट करें।
- फोरोमोन ट्रैप का प्रयोग करें।
- फसल में 1500 मि0ली0 बैलीलस थूरिनजैन्सिस (डैलीफिन बी0टी0) 1500 मि.ली. क्वीनलहास या डाई क्नलोरवास (न्यूवान) को 750 लीटर पानी में घोलकर प्रति है0 छिड़काव करें।
- कीट व्याधिकारक दवाई ब्यूवेरिया का छिड़काव करें।
- कीट व्याधिकारक दवाई ब्यूवेरिया/मैटरिजियम को गोबर की खाद के साथ मिलाकर खेते में डालें।

बीमारियाँ :–

1. झुलसा रोग :– इससे पत्तों व फलियों पर गोल व गहरे भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं जिससे पौधें कमजोर होकर कम पैदावार देते हैं।

रोकथाम :–

- रोग प्रतिरोधी किस्में उगाऐं।
- रोग रहित एवम् स्वस्थ बीज का प्रयोग करें।

- बीज की इंडोफिल एम–45 या कैप्टान (3 ग्राम/कि. ग्रा बीज) से उपचार करें।
- फसल कटाई के बाद अपशेषों को इक्टठा करके जला दें। अधिक ग्रस्त पौधों को उखाड कर नष्ट कर दें।
- बीमारी के लक्षण आने पर इंडोफिल एम–45(0.2%) से 10–15 दिनों के अंतर पर दो बार छिड़काव करें।

2. सफेद रतुआ :– पत्तों को निचली सतह पर सफेद छाले जैसे धब्बे प्रकट होते हैं जिसके कारण उपर की सतह पर हल्का हरापन होता है। बाद में यह फट जाते है। जिससे फफूंद का सफेद रस प्रकट होता है। टहिनयां और फूलों कें भाग मोटे हो जाते हैं।

रोकथाम :–

- रोग प्रतिरोधी किस्में उगाऐं।
- रोग रहित एवम् स्वस्थ बीज का प्रयोग करें।
- बीज की इंडोफिल एम–45 या कैप्टान (3 ग्राम/कि. ग्रा बीज से उपचार करें।
- फसल कटाई के बाद अपशेषों को इक्टठा करके जला दें। अधिक ग्रस्त पौधों को उखाड कर नष्ट कर दें।
- बीमारी के लक्षण बाने पर इंडोफिल एम–45(0.2%) से 10–15 दिनों के अंतर पर दो बार छिड़काव करें।

3. अलसी का सुखा रोग :– इसके आक्रमण से छोटे–छोटे पौधें मर जाते है बड़े पौधे पीले पड़कर मुरझा जाते हैं।

रोकथाम :–

- रोग प्रतिरोधी अनुमोदित किस्में जैसे हिमालिनी, नगरकोट, जानकी इत्यादि की बीजें।
- रोग ग्रस्त पौधों व उनके अवशेषों को नष्ट कर दें।

4. पत्तों कें धब्बे :– विभिन्न आकार के भूरे धब्बे पत्तों पर प्रकट होते हैं औा समय से पहले गिर जाते हैं।

रोकथाम :–

बीमारी के लक्षण आते ही फसल में ईडोफिल एम 45/ईडोफिल जैड–78 (0.25 प्रतिशत) या कारबैडाजिम 50 डब्ल्यू पी. (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

5. भूरा धब्बा : यह बीमारी सोयाबीन में फूल आने के समय आती है। यह रोग अनियमित कोणीय लाल–भूरे धब्बों के रूप में प्रकट होते है। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियां गिर जाती है।

रोकथाम :–

- बिजाई के लिए केवल रोग–रहित बीज का प्रयोग करे।
- मध्यम रोग प्रतिरोधी किस्में, पालम सोया, रहित सोया, ली और ब्रैग ही लगाएं।

6. बैक्टीरियल पस्चुयल :पत्तों दोनों सतहों पर पीले उभरे हुए धब्बे प्रकट होते है जो बाद में लाल भूरे हो जाते हैं। छोटे छोटे ऐसे धब्बे फलियों पर भी प्रकट होते हैं।

रोकथाम :–

- रोग ग्रस्त क्षेत्रों में पंजाब नं.1 किस्म न लगाएं।
- रोग प्रतिरोधी किस्में, ली पालम सोया, हरित सोया और ब्रैग लगाएं।
- रोगग्रस्त पौधों व उनके अवशेषों को नष्ट कर दें।
- कीट व्याधिकारक दवाई मैटरिजियम/ब्यूवेरिया को गोबर की खाद में मिलाकर खेत में डालें।